M. U. DUA
Editor / President

जागो जनता, बदलो सिस्टम

क्या आप आज की राजनैतिक परिस्थितियों से नाखुश हैं?

क्या आप राष्ट्र की विषम समस्याओं से अवगत हैं?

क्या आप राष्ट्र के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना चाहते हैं?

क्या आप अपने क्षेत्र की उन्नति के लिए प्रयासरत हैं?

क्या आप इस राष्ट्र को अपराध एवं भ्रष्टाचार से मुक्त करना चाहते है?

क्या आप अपनी किसी समस्या से परेशान हैं?

क्या आपके साथ कोई दुर्व्यवहार कर रहा है?

क्या आप किसी अत्याचार, अन्याय, शोषण, हिंसा या धोखे के शिकार हुए हैं?

यदि आपका उत्तर हाँ में है तो, आप तत्काल हमें हिन्दी में लिखिये, हम आपकी उपरोक्त समस्याओं का समाधान बताएंगे। हमारा पता है :–

All India Human Rights Association "AIHRA"
1/24, KMT Bhawan, SF, St # 2,
Lalita Park, Laxmi Nagar,
Delhi-110092
Ph. : 011-43026940, Fax : 011-22045629,
Mob. : 09213493068, 09313125531
E-mail : humanrights@aihra.org,
humanright16@yahoo.com,
humanright16@hotmail.com

किस पर करें यकीन

दुनिया के बड़े थिंकर वॉरेन बफे वर्षों पहले कहा था गुडविल बनाने में २० साल लगते हैं और उसे खराब करने में ५ मिनट। आज हर कोई छाया में बैठा है, क्योंकि किसी ने कभी-न-कभी कोई पेड़ लगाया होगा। उनकी कही हुई बातें आज जिंदगीनामा बन गया है और हर एक मानव दूसरे मानव को नीचा दिखाने में और चोट पहुंचाने में अपनी शान समझने लगा है। प्राइड एंड प्रिजूडिस नॉवल के ऊपर कई फिल्में बनी। किताब का सबसे बड़ा सबक यह है कि किसी की शक्ल देखकर आप उसके बारे में सही राय नहीं बना सकते। साथ ही, किसी के बारे में अपरिपक्व तरीके से भी राय नहीं बनानी चाहिए। आज से करीब २०० साल पहले लिखे जाने के बावजूद किताब ने दर्शाए गए सामाजिक दबावों को आज भी महसूस किया जा सकता है। किताब की मुख्य बातों में १. दूसरे लोग चाहते हैं कि हम उन विचारों की जिम्मेदारी लें, जिन्हें उन्होंने हमारा करार दिया है, जबकि हमने कभी उन पर गौर ही नहीं किया। २. अच्छा विचार एक बार खोता है तो हमेशा के लिये खो जाता है। ३. जितना ज्यादा हम दुनिया को देखते हैं, उतना ज्यादा असंतोष होता है। मानव स्वभाव की अस्थिरता के बारे में विश्वास और मजबूत होता जाता है। ४. हम दूसरे के घमण्ड को माफ कर सकते हैं, बशर्ते उसने हमारे स्वाभिमान को ठेस ना पहुंचाई हो। ५. गर्व और अहंकार अलग-अलग चीजें हैं। बिना अहंकार भी कोई शख्स गर्व महसूस कर सकता है। जिसे हम गर्व मानते हैं, वह दूसरों की निगाह में अहंकार हो जाता है।

आज इन्सान इन्सानी फासलों को कम करने की बजाय बढ़ा रहे हैं। शान्ति, सद्भावना व भाईचारे की जगह कुछ मुट्ठीभर लोग, लोगों के दिलों में वैमनस्य एवं अशान्ति का बीज बो रहे हैं। ऑल इण्डिया ह्यूमन राईट्स एसोसिएशन "एहरा" इन सब से कोसो दूर इन्सान की इन्सानियत, अशान्त वातावरण को अपनी जुगत से शान्त करने में लगा है। लेकिन फिर भी कई धूप-छांव देखने के बाद भी "एहरा" परिवार गलत मनसूबों वाले लोगों के शिकार ही नहीं हो रहा बल्कि अपनी राह भी भटक रहा है। जो लोग सब कुछ जानते समझते हैं वे लोग भी उन लोगों के शिकार हो रहे हैं जिनका मकसद सिर्फ और सिर्फ लोगों को तोड़ना और अपना रोटी सेंकना है हम सभी मानवाधिकार प्रेमी को अत्यधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है, वैसे असामाजिक तत्वों से जो भेड़ियों का रूप धारण कर अपने को आपका हितैषी बनता है। "एहरा" जिस उद्देश्य से बनाया गया उस उद्देश्य की राह में कई अड़चने एवं रूकावटें उन लोगों ने ही दिया जिस पर "एहरा" विश्वास किया। किसी ने ठीक ही कहा है जिस के मुंह में लग जाता है खून वह शाकाहारी नहीं हो सकता और एक दिन मांस का टुकड़ा ना मिलने पर अपने ही परिवार का करता है वध। "एहरा" अपने २४ साल के सफर में कई धूंप-छांव के साथ-साथ अनेकानेक खट्टे-मिठे अनुभव किये। कई असामाजिक तत्वों से पाला पड़ा। गुंडे, बदमाश, मवाली एवं मतलबपरस्त लोगों से दो-दो हाथ किये। एक लम्बे सफर में कई बिछड़ गये तो कई नये लोग "एहरा" के सहारा बने। कई अपने अहंकार में अलग संस्था बनाकर लोगों को गुमराह करते रहे तो कई "एहरा" की शान्ति को भंग करने में अपना कीमती समय बर्वाद करते रहे। अन्ततोगत्वा "एहरा" आपका है, आपका परिवार है और इसकी साफ छवि को धूमिल होने से बचाने का दायित्व आपके कंधों पर है। कुछ लोग तथाकथित अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य स्तर के मानवाधिकार संगठन का नाम देकर लोगों को ठगी, फर्जीवाड़ा एवं असामाजिक कार्यों में लिप्त हैं इससे सरकार भी विचलित है और "एहरा" भी।

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा दुश्मन दौरे ज़मां हमारा।"